Indian J. Soc. & Pol. 05(02):95-100:2018 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 (Till May 2,2018) **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

समाज, साहित्य एवं संस्कृति का प्रतिबिम्ब

पंकज राठौड़[1a]
[a]व्याख्याता, राजनीतिविज्ञान, भूपाल नोबल्स स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, राजसमन्द, राजस्थान,भारत

ABSTRACT

भारत में समाज का स्वरूप विविधतापूर्ण है, यहाँ विवाह, परिवार, सम्पत्ति और सामाजिक जीवन में अनेक विभिन्नताएँ है कही एक विवाह का प्रचलन है तो कुछ लोगों में बहुविवाह प्रचलित है। संयुक्त परिवार, एकांकी परिवार, दोनों ही भारत में मिलते है। सम्पत्ति की दृष्टि से विविधरुपता है जैसे – कही पितृवंशीय परिवार है जिनमें सम्पत्ति पर पुरुष का अधिकार है तो कही मातृवंशीय परिवार पाए जाते है। दक्षिण व्यवस्था से उत्तर की व्यवस्था में भिन्नता है सभी की अपनी – अपनी प्रथाएं, रीती – रिवाज, लोकाचार व रूढ़ियाँ आदि है जो विवाह, जन्म अथवा मृत्यु के समय देखी जा सकती है। बंगाली, मद्रासी, कश्मीरी, पंजाबी, राजस्थानी आदि में प्रत्येक स्तर पर विभिन्नताओं के दर्शन होते है। संस्कृति मानव समाज की अमूल्य धरोहर है, जिसके कारण ही मानव अनवरत रूप से प्रगति के पथ पर अग्रसर होता जा रहा है। विभिन्न संस्कृति के लोगों में विभिन्नता का आधार भी यह है कि जो संस्कृति के भौतिक लक्षण कहे जा सकते है और किसी सांस्कृतिक क्षेत्र की विशेषताएं थी। भारतीय साहित्य में अनेक अन्य मूल्यों का स्थान पश्चिम के मूल्यों ने ले लिया है स्वतंत्रता समानता और भातृत्व, राष्ट्रीयतावाद, विज्ञान तथा तर्कपूर्ण विचार व विशेष रूप से नए मूल्य भारतीय साहित्य में आये है, ये मूल्य राजनितिक समस्या व नागरिक स्वतंत्रता से सम्बंधित थे लेकिन जो धार्मिक सुधारवादी आन्दोलन थे, उन्होंने सामजिक मामलों में इनके द्वारा हस्तक्षेप किया, तर्कपूर्ण विचारों का विकास विज्ञानं और तकनिकी शिक्षा के अभाव के कारण तिरस्कृत हो गया है। भारतीय साहित्य में अनुकरण, संघर्ष व्यवस्था, सामंजस्य और आत्मसात आदि सभी सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ विकसित हो गयी है। इस नए साहित्य जिसमे प्रेम, स्नेह, धैर्य, तार्किक विचार व अन्वेषण कि भावना आदि का विकास हुआ है। प्राचीन भारतीय समाज से आधुनिक भारतीय समाज में विभिन्न रिती – रिवाज व प्रथाएं है जिस पर संस्कृति व साहित्य का प्रभाव पड़ा है, अब जो नया साहित्य विकसित हुआ उसमे उपन्यास, नाटक, यात्रा–वर्णन, निबंध, डायरी, कहानी, काव्य एवं महाकाव्य आदि की रचना हुई है। अतः पौराणिक नाटक लिखे जाने लगे तथा मंच पर खेले जाने लगे एवं उपन्यासो में ऐतिहासिक घटनाओ का वर्णन किया जाने लगा है।

***KEY WORDS:** समाज, साहित्य, संस्कृति, सामाजिक मूल्य, सामाजिक विकास एवं समस्याएँ।*

भारत में प्राचीन समाज की जानकारी सिन्धुघाटी सभ्यता से मिलती है, जो अब से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व विकसित हुई थी। विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताएं नदी घाटियों में विकसित हुई। पूर्व वेदिक कालीन समाज ग्रामीण और कृषक समाज या वेदिक युग में कानून की अपेक्षा, धर्म ही सामाजिक जीवन को नियंत्रित या निर्देशित करता था।(गुप्ता, 2005, पृ.3)

प्राचीन काल में समाज का स्वरुप

भारत में सभी धर्मों, जातियों, प्रजातियों एवं सम्प्रदायों के प्रति, परस्पर सहिष्णुता और सम्मान पाया जाता है। किसी के प्रति कोई द्वेष भाव नहीं होता है, ऋग्वेद का कथन – "एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" अर्थात 'सत्य एक ही है', भारतीय समाज में अनेक संस्कृतियाँ अस्तित्व में आई और फलती फूलती रही। हिन्दू, मुसलमान, सिख, बौद्ध और जैन एवं ईसाई सभी अपनी – अपनी विशेषताएँ रखतें है। यहां के समाज ने न किसी संस्कृति का दमन किया है, न ही किसी सम्प्रदाय पर अपनी संस्कृति थोपी है। इसी विशेषता के कारन भारतीय समाज में सभी धर्मों, जातियों, प्रजातियों आदि में परस्पर प्रेमभाव एवं सहिष्णुता देखी जा सकती है। भारतीय समाज में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीनों प्रकार की शक्तियों पर बल दिया गया है। इसका लक्ष्य – "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया" रहा है, इसी से भारतीय समाज में चार पुरुषार्थों – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ओर इन पुरुषार्थों की प्राप्ति के लिए आश्रम – व्यवस्था की स्थापना की गई है। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि समाज में भौतिकता एवं आध्यात्मिकता दोनों के समन्वय पर बल दिया गया है, जिससे व्यक्ति का सर्वांगींण विकास हो सके।(शर्मा, 2013, पृ. 200, 201)

साहित्य एंव संस्कृति भारतीय समाज में परिवर्तन व निरंतरता के कारक

भारतीय समाज में परिवर्तन और निरंतरता बनाये रखने के लिए अनेक कारण उत्तरदायी है। परिवर्तन एकीकरण और अनुकूलन के माध्यम से आ सकता है। अनुकूलन तब होता है, जब विद्यमान संस्थाए नयी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए फिर से सामंजस्य करे। एकीकरण तब होता है जब कोई समाज नए तत्वों को धारण करे और इनको अपना हिस्सा बना ले।(आहूजा, 2005, पृ. 22) संविधान में राज्य के लिए नीति–निर्देशक सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है। संविधान के द्वारा सभी नागरिकों को ग्राम, राज्य और राष्ट्र के स्तर पर जैसे

1: Corresponding Author

– ग्राम पंचायत, जिला परिषद्, नगरपालिकाएं, विधानसभाओं और संसद आदि के सदस्यों को चुनने के लिए मतदान के अधिकार प्रदान किए गए है। युग–युग से भारतीय समाज साहित्य व संस्कृ ति का प्रतिनिधित्व करता रहा है। साहित्य एवं संस्कृति का विकास धीरे–धीरे हुआ है, जिससे आज भी विभिन्नता में एकता की प्रक्रिया विशिष्ट रूप से क्रियाशील है, जो भारतीय समाज की विशिष्टता है।(शर्मा, 2013, पृ.18–19)

साहित्य के विभिन्न रूप समाज में सहायक

साहित्य चेतना और नवीन शोध का परिणाम है, प्रत्येक युग में साहित्य चेतना में निरंतर परिवर्तन या विकास होता रहा है इलियट के शब्दों में – "केवल अतीत ही वर्तमान को प्रभावित नहीं करता बल्कि वर्तमान भी अतीत को प्रभावित करता है" साहित्य का आदिकाल उस समय आरम्भ हुआ जब भारतीय समाज की संस्कृति उत्कर्ष में चरम शिखर पर आरूढ़ हो चुकी थी और जब उसने भक्तिकाल को अपना दायित्व सोपा।(डॉ. नगेन्द्र, 2007, पृ.1) साहित्य का वह रूप जिसमे किसी समाज या व्यक्ति – विशेष के भीतरी और बाहरी रूप का इस प्रकार वर्णन प्रस्तुत किया जाता है कि उस वस्तु का एक चित्र निर्मित हो जाता है, वह रेखाचित्र कहलाता है। आधुनिक गद्य साहित्य की सर्वाधिक सशक्त एवं लोकप्रिय विधा उपन्यास है, मुख्य कथा तथा अनेक छोटी–बड़ी प्रासंगिक घटनाओं, पात्रों और देशकाल वातावरण योजना द्वारा घटना– क्रमबद्धता के आधार पर सम्पूर्ण जीवन के प्रतिस्थापित रूप को उपन्यास कहा जाता है। उपन्यास साहित्य का वह अंग है जो गद्य के माध्यम से सम्पुर्ण समाज का चित्र उपस्थित करता है। भारत वर्ष में ही नहीं वरन विश्व के समस्त देशों में नाटक सदा से लोकानुरंजन का प्रमुख साधन रहा है। वाङःमय के विभिन्न रूपों में नाटक ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है। नाटक तथा एकांकी दृश्य काव्य है, इन्हें दृश्य साहित्य माना जाता है। इस साहित्य की खूबी यह है कि इसमें भातीय समाज के शिक्षित–अशिक्षित नागरिक दोनों इस रसास्वादन कर सकते है।(धवन, 2008, पृ. 59, 11, 39)

समाज संस्कृति की उपज है

संस्कृति एक ऐसे सामजिक नियमों एवं आदेशों का समूह है, जो व्यक्ति के आचरण को निर्धारित करते है। भारत में सभी मुसलमान टोपी पहनकर पश्चिम दिशा की और नमाज पढ़ते है, तो हिन्दू स्नान कर चन्दन–टीका लगाकर पूरब की ओर मुंह करके ध्यान करते है और दोनों हाथ जोड़कर अपना सिर झुकाते है। यह व्यवहार में अपने–आप में संस्कृति नहीं बल्कि जिस सामजिक प्रतिमान या आदर्श के अंतर्गत ऐसा व्यवहार किया जाता है, वह संस्कृति है। जॉनसन के अनुसार – "व्यवहार बहुत हद तक सांस्कृतिक होता है लेकिन यह अपने आप में संस्कृति नहीं है" समाज विभिन्न प्रकार के विश्वासों, प्रथाओ, नियम–कानूनों भाषाओं और ज्ञान का भंडार होता है। संस्कृति इसी भंडार के समग्र एक नाम है, यह समाज को जीवित रखने के लिए नितांत आवश्यक है। मानव निर्मित भौतिक वस्तु संस्कृति की उपज है।(सिंह, पृ.275,276) संस्कृति का सम्बन्ध व्यक्ति समाज और उसके पर्यावरण से है। विभिन्न समाज के विभिन्न पर्यावरण में संस्कृति के अनेक रूप दिखाई देते है। समाज और व्यक्तित्व निर्माण में संस्कृति महत्वपूर्ण योगदान है। किसी भी व्यक्ति के व्यवहार, उसकी भाषा, जीवन शैली आदि को देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि उसका पालन–पोषण किस प्रकार की संस्कृति में हुआ है।(सिंह, और सिंह,2013, पृ. 57)

वर्तमान भारतीय समाज की समस्याएं

भारतीय समाज की सर्वप्रथम समस्या निर्धनता की है, इसके साथ ही जाती व लिंग पर आधारित असमता तथा धार्मिक नृजातीय एवं क्षेत्रीय असंगति आदि ऐसे मुद्दे है, जो समकालीन भारतीय समाज में चर्चा का प्रमुख विषय है। इन मुद्दों के अतिरिक्त भारतीय समाज के कुछ ऐसे वंचित वर्ग भी है, जिनकी अपनी कुछ समस्यायें है। इन समस्याओं की जड़े तो भारतीय समाज की संरचना में है परन्तु जिनका समाधान किया जाना सामजिक न्याय की दृष्टि से अनिवार्य है, ये सभी मुद्दे एवं समस्याएँ आज भारतीय समाज के सामने अनेक प्रकार की चुनौतियाँ दे रहे है। इसलिए इन्हें समझना तथा इनके समाधान की ओर ध्यान देना, साहित्यकारों एवं सामाजिक वैज्ञानिकों प्रमुख दायित्व बन गया है। साहित्य के माध्यम से उपन्यासों, नाटको आदि में भारतीय समाज की इन समस्याओं को प्रस्तुत कर, इन्हें दूर करने का प्रयास किया जाएगा।(महाजन और महाजन, 2013, पृ.8)

विभिन्न कालों में साहित्य का भारतीय समाज पर प्रभाव

मौर्यकाल का साहित्य

मौर्यकाल का साहित्य सृजन का काल कहा जाता है। अशोक के शिलालेख और स्तम्भ लेख मौर्य साहित्य में विशेष स्थान रखते है। कात्यायन का पाणिनीय व्याकरण पर भाष्य इसी काल का है। हरिषेण की प्रयाग–प्रशस्ती, वृहदकथा के संस्कृत संस्करण, चन्द्रगुप्त और बिंदुसार के एक ब्राम्हण मंत्री सुबंध का वर्णन है – पातंजलि के महाभाष्य द्वारा इस युग की साहित्यिक समृद्धि पर प्रकाश पड़ता है, इसी काल में वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म के धार्मिक साहित्य का विकास हुआ। जैनियों के धार्मिक साहित्य के सृजन और संकलन की दृष्टि से मौर्य युग और भी अधिक महत्वपूर्ण है।(महाजन, पृ. 339, 340)

चालुक्य काल

चालुक्य राजा साहित्य और कला के महान संरक्षक थे। इस काल में अनेक विद्वानों का उल्लेख मिलता है, इस काल में संस्कृत प्राकृत और अपभ्रंश तथा गुजराती आदि भाषाओं में लिखित व्याकरण, नाटक, काव्य, वेदांत इतिहास, धार्मिक तथा साहित्यिक रचनाएं मिलती है। राजा अपने राज दरबार में

राज–कवि भी रखते थे, इस समय अनेक मंदिरों का निर्माण कराया गया तथा बहुत से मंदिर जो ध्वस्त हो चुके थे उन्हें पुनर्जीवित किया गया। (पाण्डेय, 2002, पृ. 350)

मध्यकाल – मध्यकाल भारत के लिए काफी मायने रखते है साहित्य की दृष्टि से धर्म की दृष्टि से, सांस्कृतिक आन्दोलन की दृष्टि से यह रचनात्मक भारतीयता को पुनः स्थापना की जागृति का समय था, इसी से प्रेरित तलवारें ताकत पा रही थी। इस उन्मेष का सर्वाधिक सकारात्मक उभार यह था कि सांस्कृतिक परंपरा में निहित सौहार्द्र, स्वाभिमान के तत्व उभरे थे। यह प्रतिक्रियात्मक नहीं रहा, धर्माध नहीं हुआ, यह मानवीय एकता उसकी सांस्कृतिक पहचान की समदृष्टि का प्रवाह था। भक्ति आन्दोलन भी सांस्कृतिक चेतना का ही परिणाम था। आगरा, मथुरा के किसानों तथा मध्य भारत के किसानो ने संघर्षो और शक्तिशाली विद्रोहों ने भक्ति आंदोलन से प्रेरणा प्राप्त की थी। किसी भी संघर्ष निर्माण चरित्र में रचनाकर्म में उसके सांस्कृतिक प्रवाह होते हैं।(राणावत, 2005, पृ.12)

समाज में संस्कृति का महत्व

समाज में मानवीय संबंधो को आधारभुत तत्व माना गया है साथ ही इन संबंधो के आधार पर बनाये गए अनेक संस्थात्मक मानदण्ड एवं संस्थाएँ भी अतिरिक्त आधारों के रूप में जुड़े रहे है, साथ ही समाज की संस्कृति भी सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न अंग होती है। संस्कृति के प्रमुख रूप से दो पक्ष होते है – भौतिक एवं अभौतिक। भौतिक पक्ष के अंतर्गत मनुष्य के द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ सम्मिलित की जाती है, इन वस्तुओं का उपयोग व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करता है। कमरे में बिछाया गया कालीन, परदे, सोफे, इत्यादि व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति एवं वर्ग के द्योतक होते है। समाज में रहने वाले व्यक्तियों के द्वारा उपयोग में ली जाने वाली हर वस्तु का एक ऐसा अर्थ होता है, जो कि उस समाज में रहने वाले व्यक्तियों और समूह के लिए अन्तः क्रिया एवं सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।(सिंघवी और गोस्वामी, पृ. 326) भारतीय संस्कृति में दाम्पत्य जीवन को सर्वाधिक महत्व दिया गया है और उसको वैवाहिक जीवन में निहित माना गया है जिसका आदर्श शिव–पार्वती को माना गया है। शिव–पार्वती का विवाह चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की तृतीया को हुआ था, इसी कारण इस दिन सुखी दाम्पत्य जीवन व अखंड सौभाग्य के लिए गौरी और ईश्वर की विशेष पूजा का प्रचलन हुआ है। कुँवारी कन्याएँ भी सुखद दाम्पत्य जीवन के लिए शिव जेसे वर की प्राप्ति के लिए गणगौर की पूजा करती है। पूजा के बाद गणगौर की धूमधाम से सवारी निकाली जाती है।(राणावत, 2005, पृ. 51)

समिश्र सांस्कृतिक सम्पदा का उद्विकास

भारतीय समाज और संस्कृति का इतिहास बहुत पुराना है। भारतीय संस्कृति के बहुत ही धनी, गौरवशाली और प्रभावशील संयोजन एवं एकसूत्रीकरण में इन सभी विभिन्न संस्कृतियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

सांस्कृतिक उद्विकास में प्रजातियों की भूमिका

भारत में अनेक प्रजातिया निवास कर रही है देश के विभिन्न भागों की गुफाओ में मिलते है जो उस प्रारंभिक काल के पर्यावरण और जीवन, सौन्दर्यशास्त्रीय अन्तः प्रेरणा तथा सृजनात्मक तथा इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक विचार आदि व्यक्त करते है। नव पुरातत्व विज्ञान अतिरिक्त जानकारियाँ प्रदान करना, प्रारंभ कर रहा है कि यहाँ लोग केसे रहते थे, कौन–कौनसा अनाज उगाते थे और क्या खाते थे ? भारत की जनसंख्या में प्रजातीय बहुलता तथा उसके तत्वों का समिश्रण मिलता है। सिन्धु घाटी सभ्यता के निर्माताओ के सम्बन्ध में तीन मान्यताए प्रचलित है,

1. निर्माता मिश्रित प्रजाति के थे।
2. निर्माता द्रविड़ प्रजाति के थे।
3. निर्माता आर्य प्रजाती के थे।

इस सभ्यता के अवशेषों से प्रमाण मिलते है कि उस समय प्रोटो– आस्ट्रोलायड , भूमध्यसागरीय, अल्पाइन और मंगोल प्रजातीया थी। जिन्होंने भारतीय संस्कृति के समन्वय में योगदान दिया था।

सांस्कृतिक उद्विकास और सिन्धु घाटी की सभ्यता

भारतीय समाज एवं संस्कृति है लेकिन इसकी सम्पदा के उद्विकास की प्रक्रिया को क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से सिन्धु घाटी की सभ्यता से देखा जा सकता है, सिन्धुवासी मूर्तिपूजक एवं प्रकृति की शक्तियों के उपासक थे तथा उनकी उपासना में अग्नि, यज्ञ और हवन का विशेष महत्व था। ये शिव पूजा तथा लिंग पूजा में विश्वास करते थे। समाज के धनी लोग सोना–चाँदी पीतल और अनेक धातुओ के जेवर तथा कीमती हीरे–जवाहरात पहिनते थे। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के उदभव, विकास एवं समिश्रण के संदर्भ में लिखा है कि शिव–पूजा, लिंग–पूजा, देवी–पूजा आदि इसी काल से आज तक चली आ रही है।

समिश्र सांस्कृतिक सम्पदा के वैदिक सभ्यता का योगदान

भारतीय सांस्कृतिक सम्पदा में वैदिक सभ्यता एवं संस्कृ ति के संस्थापको को ऋग्वेद में 'आर्य' कहा गया है। बाहरे से आये आर्य नवागन्तुको ने भारत के मूल निवासियों के लिए 'दस्यु' तथा दास आदि हीन शब्दों का प्रयोग किया तथा अपनी श्रेष्ठता बताने के लिए 'आर्य' शब्द का प्रयोग किया था जिसका संस्कृत भाषा में, 'सुसंस्कृत कुलीन ' या 'श्रेष्ठ'। इन आर्यों ने भारत में पहिले से ही बस रही प्रजातियों द्वारा विकसित सभ्यता और संस्कृ ति की उपयोगी और महत्वपूर्ण विशेषताओ को अपनाया। इस

प्रकार आर्यों ने अपनी संस्कृति के साथ स्थानीय संस्कृति का समन्वय करते हुए भारत में एक उन्नत तथा बहुल समाज एवं संस्कृति की परंपरा की प्रक्रिया का शुभारम्भ किया। आर्यों द्वारा विकसित सभ्यता को ही ' वैदिक सभ्यता' कहते है। इस सभ्यता के एकमात्र स्त्रोत वैदिक साहित्य ही है। जिसकी रचना आर्यों ने की थी।

समिश्र सांस्कृतिक सम्पदा में जैन धर्म का योगदान

भारत में सांस्कृतिक समिश्रण में जैन धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका एवं योगदान रहा है जैन धर्म का भारतीय समाज की भाषा और और साहित्य के समन्वय में विशेष योगदान रहा है। जैन लेखको ने संस्कृत और प्राकृत भाषा साहित्य को अपनी मान्यताओ के साथ समन्वित किया। जैन धर्म प्रचारक जहा भी गए उन्होंने वहा की भाषा को उपदेश और साहित्य का माध्यम बनाया। इन्होने आर्य और द्रविड़ दोनों ही परिवारों की भाषाओ को सीखा तथा उसी में धर्म का प्रचार करके भारत में भाषाई एकता और समन्वय को स्थापित करने में योगदान किया।

समिश्र सांस्कृतिक सम्पदा में बौद्ध धर्म का योगदान

बौद्ध धर्म ने भारतीय समाज की अनेक कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलन किया तथा शील, आचरण की शुद्धता, सत्य, धर्म, संयम, ब्रम्हाचार्य आदि पर जोर दिया। बौद्ध धर्म के द्वारा भारतीय साहित्य और कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय समन्वय हुआ। बौद्ध धर्म के विद्वानों ने पाली और संस्कृत भाषा में बौद्ध दर्शन, धार्मिक विचार एवं महात्मा बुद्ध के जीवन के आधार पर प्रभूत साहित्य लिखा। इससे भारतीय साहित्य समृद्ध हुआ एवं लोक–भाषाओ के विकास में सहयोग दिया। भारतीय तर्कशास्त्र का विकास बौद्ध दिग्नाग ने ' न्याय प्रवेश' और 'आलंबन परीक्षा' नामक ग्रन्थ लिखकर दिया। बौद्धों द्वारा लिखे गए ' बुद्ध–चरित', 'सारिपुत्र प्रकरण', नाटक तथा 'मिलिन्द्पन्हो' ' महावस्तु', मंजूश्री–मुलकल्प और दिव्यदान ग्रन्थ भारतीय साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते है। भारतीय संस्कृति के अन्य अनेक क्षेत्रों में विविधता लाने में बौद्ध धर्म का महान योगदान रहा है। इस धर्म ने " अहिंसा परमोधमर्रू " के आदर्श को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बनाया जिसे भारत के आधुनिक युगपुरुष राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपनाया तथा अपने आन्दोलन का मुख्य साधन बनाया।

समिश्र सांस्कृतिक सम्पदा में इस्लाम संस्कृति का योगदान

ताराचंद ने लिखा है कि भारत का संपर्क अरब से अत्यंत प्राचीन है। पश्चिम भारत में अरब लोगो की बस्तियाँ इस्लाम धर्म के उदय से पूर्व ही वि।मान थी। इतिहास के विद्वानों के अनुसार इस्लाम का प्रभाव भारतीय समाज एवं संस्कृति तथा साहित्य पर सांतवी शताब्दी से माना जा सकता है। जब अरब के मुसलमानों ने भारत में बसना शुरु कर दिया था। इस्लाम संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति के समन्वय के सभी क्षेत्रों, कला, साहित्य, रिती–रिवाज, जाती–प्रथा, पर्दा–प्रथा, बाल–विवाह, और सती–प्रथा आदि पर पड़ा। अकबर जैसे शासको ने विभिन्न समुदायों तथा धर्मावलम्बियों के बीच अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयास किये थे। लेनपूल का कहना था कि अकबर भारत के शासको में सर्वोत्तम शासक हुआ है, वह साम्राज्य का सच्चा संस्थापक और व्यवस्थापक था। उसने राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक एकता और समन्वय के लिए अनेक प्रयास किए थे। इस्लाम का भारतीयकरण था। भारत में संस्कृति के संश्लेषण के सन्दर्भ में जवाहरलाल नेहरु विश्ववि।ालय के प्रोफेसर रशुदुधीन खान ने अपने एक लेख में स्पष्ट किया है कि 12वी शताब्दी से संस्कृति की जड़े जमने और फैलने लगी थी जब अरेबियन, इरानियन और इंडियन तीन भौगोलिक रथ से निर्धारित सांस्कृतिक पट्टियों के मध्य परस्पर आदान–प्रदान हुआ।

ब्रिटिश शासन

भारतीय समिश्र संस्कृति पर ब्रिटिश शासनकाल के अनेक प्रभाव पड़े है। भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में अनेक परिवर्तन ब्रिटिश सरकार, ईसाई मिशनरियो और शिक्षा के कारन हुआ है। इन कारणों का प्रभाव के कारण भारतीय समाज में सुधार आन्दोलन, मध्यम वार्ड का उदय, औ।ोगिकीकरण, व्यक्तिवादिता, पूंजीपति आदि विभिन्न विचारधाराओ का प्रसार, नगरीकरण, परिवहन एवं राष्ट्रीयता की भावना आदि का उदभव एवं विकास हुआ है। ब्रिटिश शासन औ।ोगिक, स्पर्धाशील और व्यक्तिवादी संस्कृति का समिश्रण है। इसीलिए ब्रिटिश शासन के भारतीय संस्कृति पर अनेक प्रभाव पड़े थे। के.एम.पणिकर के अनुसार, "ब्रिटिश शासन की सबसे अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि भारत का एकीकरण थी"। ब्रिटिश शासन से भारत में एक नया शिक्षित वर्ग का उदय हुआ, उसने भारतीय साहित्य कला, दर्शन, आदि में अनेक योगदान दिए।

स्वातंर्त्योत्तर भारतीय समाज

भारत में सभी नागरिको को समानता, स्वतंत्रता और न्याय के साथ मौलिक अधिकार भी प्रदान किए गए है। संविधान के द्वारा सभी नागरिको को ग्राम, राज्य और राष्ट्र के स्तर पर विभिन्न संगठनो, जैसे– ग्राम पंचायत, जिला परिषद्, नगर पालिकाए, विधान सभाओ और संसद आदि के सदस्यों को चुनने के लिए मतदान के अधिकार प्रदान किये है। न्यायिक समानता, शिक्षा में प्रगति, पंचवर्षीय योजनाए, सामाजिक, आर्थिक विकास आदि के द्वारा भारत का विकास किया जा रहा है। भारतीय समाज की समिश्र सांस्कृतिक सम्पदा का उदभव और विकास धीरे धीरे हुआ है तथा आज भी विभिन्नता में एकता की प्रक्रिया विशिष्ट रूप से क्रियाशील है जो भारतीय समाज की विशिष्टता है।(शर्मा, 2013, पृ.सं. 475 – 488)

भारतीय संस्कृति में सहभागिता

भारतीय संस्कृति में सहभागिता होती है, यदि कोई एक व्यक्ति किसी कार्य को एक विशेष तरीके से करता है तो वह संस्कृति नहीं है और न ही किसी एक व्यक्ति के विचार संस्कृति है, यह उसकी व्यक्तिगत आदत हो सकती है, संस्कृति का प्रतिमान नहीं। संस्कृति कहे जाने के लिए किसी वस्तु या व्यवहार का किसी समूह या जनसंख्या के समग्र द्वारा स्वीकृत किया जाना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, हम लोगो के शिष्टाचार का तरीका, भोजन करने हेतु टेबिल–शिष्टाचार, विवाह के अवसर पर स्वागत, सत्कार की पद्धति एक जैसी है, अतः ये हमारी संस्कृति के अंग है। जब हम किसी समूह में किसी एक व्यवहार में सहभागी होते है अर्थात सभी उसका पालन करते है तो हमारा तात्पर्य संस्कृति से होता है। जब हम कसी उप–समूह के बीच पाए जाने वाले व्यवहार में सहभागिता की चर्चा करते है तो हमारा तात्पर्य– उप–संस्कृति से होता है। जब हम किसी भौगोलिक क्षेत्र में व्याप्त सामान्य लक्षणों, व्यवहार, क्रियाओ का उल्लेख करते है तो हमारा तात्पर्य संस्कर्ती के व्यापक अर्थ से है जैसे– पश्चिमी देशों में सामान्य है, जिसमे वहा के सभी लोग सहभागी है। संस्कृ ति समुह के अधिकांश सदस्यों के द्वारा स्वीकृत या मान्य होती है।(सिंघवी,गोस्वामी, पृ.347)

भारतीय संस्कृति में तीन आधारभूत सिध्दांतों का उल्लेख है –

1. परब्रम्हा की धारणा
2. आत्मा में विश्वास
3. आत्मसंयम का आचारनितिक सिद्धांत

राजनितिक दृष्टि से ये तीनो धारणाये लोकतंत्र विरोधी नहीं है, बल्कि ये लोकतंत्र को पुष्ठ भी कर सकती है। यह सत्य है कि आधुनिक प्रतिनिधि लोकतंत्र की संस्थाए तथा कार्यविधि पश्चिम से ली गई है हम आधुनिक लोकतंत्र में भारतीय संस्कृति के प्राणमुलक तथा सारयुक्त सन्देश को जोड़कर उसके सैद्धांतिक आधारों मजबूत बना सकते है। हम केवल लाक और रूसों के तर्कों पर बल भारतीय लोकतंत्र की नीव को सुदृढ़ नहीं बना सकते। यदि हम चाहते है कि लोकतंत्र भारतीय जनमानस में भावात्मक स्फूर्ति उत्पन्न करे तो हमें उससे उन धारणाओ और प्रस्थापनाओ की भाषा में बात करनी पड़ेगी जिनसे वे भली–भाँती परिचित है। यदि हम कुछ आधारभुत लोकतांत्रिक आदर्शों को ले और उनका भारतीय सांस्कृतिक विरासत के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करे तो हमारा भारत संक्रमण, खतरे, आतंक और संशय का युग है। मार्क्स और लेनिन का दृढ विश्वास था कि पूंजीवाद और साम्यवाद में हिंसात्मक सशस्त्र युद्ध होगा ही। पेरेंतो मोस्का और मिशेल्स ने यह स्पष्ट किया कि ब्रम्हा व्यवस्था चाहे जेसी भी हो, आतंरिक निर्णयकारी प्रक्रियाओ पर बराबर चालाक अल्पसंख्यकों का ही बोलबाला रहता है।(वर्मा, 2005–06, पृ.660)

भारतीय मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण के अनुसार भारत में 91 संस्कृति क्षेत्र है, ये सब संस्कृति क्षेत्र आम आदमी के जीवन में पृथक स्थान रखते है। गुजरात का सामान्य आदमी जानता है कि सौराष्ट्र की संस्कृति मध्य गुजरात की संस्कृति से भिन्न है। मध्य प्रदेश के मालवा का आम आदमी समझता है कि निमाड़ की संस्कृति मालवा से जुदा है। राजस्थान का जनजीवन यह भली प्रकार जानता है कि थार के रेगिस्तान की संस्कृति दक्षिण राजस्थान की संस्कृति से भिन्न है। संस्कृति क्षेत्र क्षेत्रवाद को जन्म देता है। प्रत्येक क्षेत्र की प्रतिस्पर्धी मांगे होती है और इन मांगों को लेकर लोग सड़क पर आ जाते है, आन्दोलन करते है। कुछ नये राज्य जैसे कि छत्तीसगढ़, झारखंड तथा वनांचल इसी क्षेत्रीयता पर अस्तित्व में आये है। श्रीनिवास तो कहते है कि प्रत्येक क्षेत्रीय पहचान की कुछ विशेषता होती है। यह विशेषता भाषा, भौतिक संस्कृति, भोजन की आदतें, लोक साहित्य और धर्म के स्थानीय स्वरूपों में देखी जा सकती है।(दोषी और जैन, 2005, पृ.38)

मैलिनोवासकी की मान्यता यह है कि संस्कृति की अवधारणा को मानवीय आवश्यकताओं के बिना नहीं समझा जा सकता है। इसीलिए उसके अनुसार " संस्कृति प्राप्त आवश्यकताओं की एक व्यवस्था तथा उद्देश्यमूलक क्रियाओ की एक संगठित व्यवस्था है। " संस्कृति के अंतर्गत जीवन के समग्र तरीके आ जाते है जो व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करते है और उसे पृकृति के बन्धनों से मुक्त करते है, संस्कृति मानव का वह साधन है जिसके द्वारा अपने साधनों को प्राप्त करता है। किसी संस्कृति या सांस्कृतिक तत्व अथवा प्रतिमान की निरंतरता इसी बात पर निभर होती है कि उसमे शारीरिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता है या नहीं है ? जिस प्रकार व्यक्तिगत–आदत तभी बनी रहती है जबकि उससे व्यक्ति को सचेत और अचेत इच्छा या प्रेरणा की तृप्ति या पूर्ति होती है, उसी प्रकार संस्कृति की सामूहिक आदतों में भी समुह की आवश्यकताओ की पूर्ति करने का गुण होता है। सम्पूर्ण संस्कृति तक की समाप्ति हो सकती है यदि वह निरंतर अपने समाज के सदस्यों की महत्वपूर्ण शारीरिक, मानसिक व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असफल रहे है। वास्तव में एक संस्कृति व साहित्य के अनेक भाग और उपभाग होते है जो कि संपूर्ण सामजिक व्यवस्था से संगठित होते है मैलिंनोवसकी की मतानुसार संस्कृति वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने शारीरिक तथा मानसिक और अंतिम रूप में बौद्धिक अस्तित्व को बनाये रखने में सफल होता है। मानव केवल एक प्राणीशास्त्रिय प्राणी ही नहीं, अपितु एक सामजिक प्राणी भी है और उन दोनों ही रूपों में उसकी अनेक शारीरिक, मानसिक आवश्यकताये होती है। इस आवश्यकताओं की पूर्ति किए बिना सामाजिक प्राणी के रूप में मानव का अस्तित्व नहीं रह सकता है। इन्ही आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव संस्कृति का

निर्माता बनता है और उसके द्वारा अपने शारीरिक तथा मानसिक या बौद्धिक अस्तित्व को बनाए रखता है।(मुखर्जी, 2013, पृ. 397,398)

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समाज साहित्य एवं संस्कृति का प्रतिबिम्ब है। व्यक्ति ही हमेशा सोचता है, प्रतिक्रिया करता है, स्वप्न लेता है और आन्दोलन करता है। अतः संस्कृति का उद्‌गम व्यक्ति की क्रियाओं में है तथा व्यक्ति ही यथार्थ है। भक्तिकाल में तीन प्रकार की काव्यधारा का विकास हुआ था। निर्गुण, सगुण तथा सूफी कवियों ने इस काल में अनेक साहित्य की रचना की जिसका प्रभाव समाज पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ा हिन्दी साहित्य के विकास तथा विस्तार के बाद इतिहास लेखन की प्रवर्ति 19वीं शताब्दी में सामने आई है। आधुनिक आर्य भाषाओं के विकास के साथ ही 10वीं शताब्दी में हिन्दी भाषा के विकास का प्रभाव समाज पर पड़ा। अतः मनुष्य सामाजिक प्राणी है। अरस्तु के शब्दों में – ''जो मनुष्य समाज में नहीं रहता है, वह देवता है या पशु''। मनुष्य के लिए समाज अनिवार्य है। वह सांस्कृतिक पर्यावरण में रहता है। आधुनिक समय साहित्य समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है, अनेक साहित्यिक गतिविधियों का समाज पर प्रभाव पड़ता है। भारतीय संविधान में भी व्यक्तिगत एवं सामाजिक हितों में सामांजस्य का प्रयास भी मूल अधिकारों के माध्यम से किया गया है एवं संविधान के भाग 4 में राज्य के नीतिनिर्देशक तत्व का उल्लेख किया है जो सामाजिक आर्थिक न्याय को बढ़ावा देकर लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करेंगे और हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व एवं उसका परिक्षण करते है। भारत में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना कि गई जिसके अन्तर्गत अल्पसंख्यक समुदायों को अपनी भाषा संस्कृति आदि को सुरक्षित रखने एवं अपने पसन्द की शिक्षा संस्थाओं को स्थापित करने का अधिकार प्राप्त है। भारत के सभी नागरिकों का यह कर्तव्य है कि भारतीय संविधान का पालन करें उसके आदर्शों संस्थाओं राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें। भारत सरकार के द्वारा साहित्य एवं संस्कृति में योगदान देने वाले नागरिकों को समय समय पर पुरस्कृत किया जाता है। इन नागरिकों के द्वारा रचित साहित्य का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से समाज पर पड़ता है। अतः आज के युग में समाज साहित्य व संस्कृति का प्रतिबिम्ब करता है।

सन्दर्भ

गुप्ता,मोतीलाल (2005) '*भारत में समाज*', जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी

शर्मा, वीरेंद्र प्रकाश (2013) '*भारत में समाज संरचना और परिवर्तन*', जयपुर, पंचशील प्रकाशन

आहूजा, राम (2005) , *'भारतीय समाज',* नई दिल्ली, रावत पब्लिकेशन्स

डॉ. नगेन्द्र (2007) *'हिंदी साहित्य का इतिहास*', नई दिल्ली, मयूर पेपरबैक्स

धवन, डॉ. मधु (2008) *'साहित्यिक विधाएँ सैद्धांतिक पक्ष*', नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन

सिंह, जे.पी., *'समाजशास्त्र अवधारणा एवं सिद्धांत*', नई दिल्ली, प्रेटिस हाल ऑफ इंडिया

सिंह, डॉ वी.एन. और डॉ. जनमेजय सिंह (2013) *'नगरीय समाजशास्त्र',* नई दिल्ली, विवेक प्रकाशन

महाजन, डॉ. धर्मवीर और डॉ. कमलेश महाजन (2013) *'भारतीय समाज : मुद्दे एवं समस्याये',* नई दिल्ली, विवेक प्रकाशन

महाजन, वी. डी. , *'प्राचीन भारत का इतिहास',* नई दिल्ली, एस चंद एंड कम्पनी लिमिटेड

पाण्डेय, विमल चन्द्र (2002) '*प्राचीन भारत का इतिहास',* नई दिल्ली, एस चंद एंड कम्पनी लिमिटेड

राणावत, डॉ. मनोहर सिंह (2005) '*मेवाड़ का सामाजिक एवं सांस्कृतिक ईतिहास',* उदयपुर, प्रकाशक प्रताप शोध प्रतिष्ठान भूपाल नोबल्स संसथान विद्या प्रचारिणी सभा

सिंहवी, डॉ. नरेन्द्र कुमार व सुधाकर गोस्वामी,, '*समाजशास्त्रीय विवेचन*', जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी

वर्मा, डॉ. वी. पी.(2005–06) '*आधुनिक भारतीय राजनितिक चिंतन*', आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

दोषी, डॉ. एस. एल., पी. सी. जैन (2005) '*भारतीय समाज संरचना और परिवर्तन*', नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

मुखर्जी, रविन्द्र नाथ (2013) '*सामाजिक विचारधारा',* दिल्ली, विवेक प्रकाशन